सूर्याष्टकम्

संगीत रचना : गुरुमाई चिद्विलासानन्द

श्लोक १

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते॥

हे आदिदेव, आपको नमस्कार! हे भास्कर, आप मुझ पर प्रसन्न हों।
हे दिवाकर अर्थात् दिन व प्रकाश के सृजनकर्ता, आपको नमस्कार है!

श्लोक २

सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम्।
श्वेतपद्मधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्॥

जो सात घोड़ों वाले रथ पर विराजमान हैं,
ऋषि कश्यप के पुत्र हैं और श्वेत कमल को धारण किए हुए हैं,
उन प्रभामय सूर्यदेव को मैं प्रणाम करता हूँ।

श्लोक ३

लोहितं रथमारूढं सर्वलोकपितामहम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्॥

जो लाल रंग के रथ पर विराजमान हैं, समस्त लोकों के पितामह हैं,
महापापों को हरने वाले हैं, उन सूर्यदेव को मैं प्रणाम करता हूँ।

श्लोक ४

त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्माविष्णुमहेश्वरम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्॥

जो महाशूर हैं, त्रिगुणधारी हैं,
महापापों को हरने वाले हैं,
तथा ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर हैं,
उन सूर्यदेव को मैं प्रणाम करता हूँ।

श्लोक ५

बृंहितं तेजःपुञ्जं च वायुमाकाशमेव च।
प्रभुं च सर्वलोकानां तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्॥

जो सर्वव्यापी तेजपुंज हैं, जो वायु व आकाश हैं,
समस्त लोकों के स्वामी हैं,
उन सूर्यदेव को मैं प्रणाम करता हूँ।

श्लोक ६

बन्धूकपुष्पसङ्काशं हारकुण्डलभूषितम्।
एकचक्रधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्॥

जो बन्धूकपुष्प [गुलदुपहरिया पुष्प] के समान चमकते हैं,
जो हार व कुण्डल से सुशोभित हैं, एक पहिये वाले रथ पर आरूढ़ हैं,
उन सूर्यदेव को मैं प्रणाम करता हूँ।

श्लोक ७

तं सूर्यं जगत्कर्तारं महातेजःप्रदीपनम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्॥

जगत के सृजनकर्ता सूर्यदेव,
महातेज से प्रदीप्त हैं और महापापों को हरने वाले हैं।
उन देवता को मैं प्रणाम करता हूँ।

श्लोक ८

तं सूर्यं जगतां नाथं ज्ञानविज्ञानमोक्षदम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्॥

जगत के नाथ सूर्यदेव, महापापों को हरने वाले हैं,
ज्ञान, विज्ञान व मोक्ष के प्रदाता हैं।
उन देवता को मैं प्रणाम करता हूँ।

श्लोक ९

सूर्याष्टकं पठेन्नित्यं ग्रहपीडाप्रणाशनम्।
अपुत्रो लभते पुत्रं दरिद्रो धनवान्भवेत्॥

ग्रहों द्वारा उत्पन्न पीड़ाओं को हर लेने वाले
इस सूर्याष्टकस्तोत्र का पाठ सदैव करना चाहिए।
इस स्तोत्र का पाठ करने से निस्सन्तान को पुत्रप्राप्ति होती है
और दरिद्र व्यक्ति धनवान हो जाता है।

श्लोक १०

आमिषं मधुपानं च यः करोति रवेर्दिने।
सप्तजन्म भवेद्रोगी प्रतिजन्म दरिद्रता॥

सूर्यदेव को समर्पित दिन पर जो मांस का सेवन और मदिरापान करता है,
वह सात जन्मों तक रोगी और हर जन्म में दरिद्र रहेगा।

श्लोक ११

स्त्रीतैलमधुमांसानि यस्त्यजेत्तु रवेर्दिने।
न व्याधिः शोकदारिद्र्यं सूर्यलोकं स गच्छति॥

किन्तु जो व्यक्ति सूर्यदेव को समर्पित दिन पर
स्त्री, तैलयुक्त भोजन, मदिरा व मांस को त्याग देता है,
उसे व्याधि, दुःख या दरिद्रता कभी स्पर्श नहीं करेगी।
ऐसा व्यक्ति सूर्यलोक को प्राप्त करता है।

इति श्रीशिवप्रोक्तं सूर्याष्टकं संपूर्णम्॥

श्रीशिव द्वारा कथित श्रीसूर्याष्टकस्तोत्र अब सम्पूर्ण होता है।

© एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन® । सर्वाधिकार सुरक्षित।

***

एलिज़बेथ ग्रिमबर्गन द्वारा लिखित परिचय

सूर्य तथा आकाश में प्रतीत होने वाली सूर्य की यात्रा मानवजाति के लिए नवारम्भों का एक आदिकालीन व शक्तिपूरित चिह्न है। सूर्य प्रकाश प्रदान करता है जो समस्त जीवों को पोषित करता है। भारत की आध्यात्मिक परम्पराओं में सूर्य का ‘सूर्यदेवता’ के रूप में सम्मान किया गया है; इसका वर्णन सर्वप्रथम ऋग्वेद में पाया जाता है जो प्राचीनतम शास्त्रों में से एक है।

सूर्यदेवता को महामहिमावान माना जाता है। ‘सूर्याष्टकम्’ नामक उनकी स्तुति में उनका वर्णन किया गया है कि वे सात घोड़ों वाले तेजोमय स्वर्णिम रथ पर विराजमान हैं और श्वेत कमल को धारण किए हुए हैं जो कि शुद्धता का प्रतीक है। वे सूर्यप्रकाश की जगमगाती, प्रभामय किरणों से घिरे हैं।

इस पृष्ठ पर प्रकाशित सूर्याष्टकम् ‘साम्बपुराण’ से है। इस पावन ग्रन्थ में भगवान श्रीकृष्ण के एक पुत्र, साम्ब की कथा बताई गई है जो असाध्य रोग से ग्रस्त हो गए थे। देवर्षि नारद से मार्गदर्शन पाकर साम्ब ने चिनाब नदी के निकट सूर्यदेवता की उपासना की। बारह वर्ष की तपस्या के पश्चात् सूर्यदेवता ने उनके सम्मुख प्रकट होकर उन्हें रोगमुक्त कर दिया।

इस स्तोत्र के आठ श्लोकों [अष्टकम्] में सूर्यदेवता के दिव्य गुणों तथा उनके पोषणकारी व आरोग्यप्रद प्रकाश—आन्तरिक व बाह्य प्रकाश—का स्तुतिगान किया गया है। जब हम सूर्याष्टकम् के इन श्लोकों को गाते हैं तो हम भी सूर्यदेवता के आशीर्वादों का आवाहन करते हैं—स्फूर्ति से भरा स्वास्थ्य, प्रसन्नता से भरी समृद्धि, दृढ़ पराक्रम, ओजपूर्ण बल और कुशाग्र बुद्धि तथा ज्ञान व मोक्षप्राप्ति भी।

जब मैं सूर्यदेवता के बारे में चिन्तन-मनन करती हूँ तो जो बात मुझे प्रभावित करती है, वह यह कि जो सूर्यप्रकाश इस पृथ्वी पर जीवन का संरक्षण करता है, उसी प्रकाश के माध्यम से मानव देख व समझ पाते हैं, पहचान पाते हैं। वह प्रकाश ही है जो द्रष्टा व दृश्य को, ज्ञाता व ज्ञेय को जोड़ता है। ‘प्रकाश’ संस्कृत भाषा का एक शब्द है। जब मैं अपनी खिड़की के बाहर देखती हूँ तो वह ‘प्रकाश’ ही है जो पेड़ों को आलोकित कर उन्हें दृश्यमान बनाता है। ‘प्रकाश’ के साथ अभिन्न रूप से जो जुड़ा है, वह है

‘विमर्श’ अर्थात् बोध की शक्ति। वह ‘विमर्श’ ही है जिसके कारण मैं यह पहचान पाती हूँ कि जो रूपाकार मैं देख रही हूँ, वे पेड़ हैं।

भारत की आध्यात्मिक परम्पराओं के अनुसार ‘प्रकाश’ और ‘विमर्श’ ब्रह्माण्डीय परम चिति के पहलू हैं। चेतन आत्मा ही हमारी समस्त मानसिक अवस्थाओं की साक्षी है तथा उन्हें प्रकाशित करती है, साथ ही यह हमारे समस्त बोध, अनुभवों व संवेदनों की भी साक्षी व प्रकाशक है।

मेरे लिए, सूर्य चिति के इस परम प्रकाश का एक रूपक है जो मेरे मन के अन्तराकाश में व्याप्त होकर मेरे लिए यह सम्भव बनाता है कि मैं जिन वस्तुओं को देखती हूँ, उन्हें मैं पहचान सकूँ। जब बोध की इसी शक्ति को नामसंकीर्तन या ध्यान द्वारा अन्तर्मुख किया जाता है तो इस शक्ति द्वारा मैं अपनी अन्तरतम आत्मा की अनुभूति करती हूँ। अतः सूर्यदेवता की छवि आध्यात्मिक ज्ञान के उस प्रकाश को भी दर्शाती है जो अज्ञान व सीमिततारूपी अन्धकार पर विजय प्राप्त करता है।

‘सूर्याष्टकम्’ का प्रत्येक श्लोक चिन्तन-मनन के लिए स्वर्णिम रत्न है। सूर्यदेवता “महापापों को हरने वाले हैं,” यह वाक्यांश ध्यान आकर्षित करता है जिसमें सूर्यदेव द्वारा साम्ब को रोगमुक्त करने की कथा प्रतिध्वनित होती है। सूर्य दोनों के लिए अर्थात् शरीर व मन के लिए आरोग्य-प्रदाता है। हमारे पापों का हरण होने पर हम सम्पूर्ण व तेजस्वी हो जाते हैं। हमारी सीमितताएँ विलीन होती हैं और हम अपने ज्योतिर्मय स्वरूप की अनुभूति कर पाते हैं।

सूर्य हर समय कहीं न कहीं जगमगा रहा होता ही है, उसी के समान आत्मा अर्थात् चिति का परम प्रकाश नित्य विद्यमान है जो हमारे हृदय व मन को आलोकित करता रहता है।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।